Total No. of Printed Pages—3

4 SEM FYUGP HINC4A

2026

(May/June)

HINDI

(Core)

Paper : HINC4A

(आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कविता)

Full Marks : 60

Time : 2½ hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions.

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दीजिए : 1×6=6

(क) विद्यापति पदावली की रचना किस राजा के आश्रय में रहकर रची गयी?

(ख) मीराबाई अपने इष्टदेव श्रीकृष्ण को किस रूप में मानती थी?

(ग) कबीर की भाषा को सधुक्कड़ी भाषा किसने कहा है?

(घ) जायसी की प्रसिद्धी का आधार महाकाव्य का नाम क्या है?

(ङ) सूरदास किसके शिष्य थे?

(च) बिहारीलाल किस काल के कवि हैं?

2. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8×3=24

(क) नन्दक नन्दन कदम्बक तरु तर, धिरे-धिरे मुरलि बजाब।
समय संकेत निकेतन बइसल, बेरि बेरि बोलि पठाब॥
सामरि तोरा लागि अनुखन बिकल मुरारि।
जमुनाक तिर उपवन उदबेगल, फिरि फिरि ततहि निहारी॥
गोरस बेचए आवइत जाइत, जनि जनि पुछ बनमारि॥

अथवा

मानुष हौं तो वही रसखान बसौं ब्रज गोकुल गाँवन के ग्वारन।
जो पसु हौं तो कहा बस मेरो चरौं नित नंद की धेनु मँझारन॥
पाहन हौं तो वही गिरि को जो धरयौ कर छत्र पुरंदर धारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं मिल कालिंदी कूल-कदंब की डारन॥

(ख) पूस जाड़ थरथर तन काँपा। सुरूज जाइ लंकादिसि चाँपा॥
बिरह बाढ़ दारुन भा सीऊ। कँपि कँपि मरौं लेई हरि जीऊ॥
कंत कहाँ लागौ ओहि हियरे। पंथ अपार सूझ नहिं नियरें॥
सौर सपेती आवै जूड़ी। जानहुँ सेज हिवंचल बूड़ी॥

अथवा

चरण कमल बंदौं हरि राई।
जाकी-कृपा पंगु गिरि लांघै, अंधे को सब कुछ दरसाइ॥
बहिरौ सुनै गूंग पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराई।
सूरदास स्वामी करुणामय, बार-बार बंदौ तिहि पाई॥

(ग) ऐसे को उदार जग माहीं।
बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोउ नाहीं॥
जो गति जोग बिराग जतन करि नहिं पावत मुनि ग्यानी।
सो गति देत गीध सबरी कहँ प्रभु न बहुत जिय जानी॥

अथवा

"कहत, नटत, रीझत, खिझत मिलत, खिलत लजियात।
भरे भौन में करत है नैननु हीं सब बात॥
बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाई।
सौंह करै भौहनु हसै, दैन कहै नटि जाई॥"

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 10×3=30

(क) विद्यापति को आप भक्त कवि मानते हैं या शृंगारी? पठित पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

(ख) मीराबाई की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए।

(ग) "कबीरदास को बाह्याडम्बर से चिढ़ थी।" उक्त कथन की पुष्टि उदाहरण सहित कीजिए।

(घ) जायसीकृत 'पद्मावत' में वर्णित 'नागमती वियोग खंड' का वर्णन कीजिए।

(ङ) सूरदास के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

(च) केशव को 'कठिन काव्य का प्रेत' क्यों कहा जाता है? विस्तारपूर्वक लिखिए।

(छ) गोस्वामी तुलसीदास एक महान समन्वयवादी कवि थे। समीक्षा कीजिए।

★★★